पाक अधिकृत कश्मीर (POK) में संस्कृत अभिलेख

[स्रोत: टाइम्स ऑफ इंडिया]

चर्चा में क्यों?

हाल ही में, **पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (POK)** में **गिलगित के पास ब्राह्मी लिपि** में लिखा एक चौथी शताब्दी का **संस्कृत अभिलेख** प्राप्त हुआ है।

- **गिलगित** से प्राप्त अभिलेख में उल्लेख है कि **पुष्पसिंह** ने अपने गुरु (नाम आंशिक रूप से लुप्त हो गया है) की योग्यता के लिये **महेश्वरलिंग** की स्थापना की थी।

नोट:

- इससे पहले वर्ष 2024 में, **पेशावर के पास 10वीं** शताब्दी का **संस्कृत और शारदा लिपि (कश्मीर में संस्कृत और कश्मीरी के लिये प्रयुक्त)** अभिलेख खोजा गया था, जिसमें छठी पंक्ति में **"दा(धा)रिनी ("Da(Dha)rini")"** के उल्लेख के साथ **बौद्ध धारणी** मंत्रों का संदर्भ दिया गया था।
  - **बौद्ध धारणी** पवित्र **मंत्रों या जापों** को संदर्भित करता है, जिनका उपयोग **बौद्ध धर्म** में **सुरक्षा, शुद्धिकरण** और **आशीर्वाद प्राप्त करने** के लिये किया जाता है।
  - ऐसा माना जाता है कि इन मंत्रों में आध्यात्मिक शक्ति होती है और इन्हें अक्सर **कल्याण** को बढ़ावा देने के लिये **अनुष्ठानों में गाया जाता** है। धारिणी में आमतौर पर पवित्र **शब्दांश (syllables) या वाक्यांश (Phrases)** होते हैं।

ऐतिहासिक अभिलेखों का क्या महत्त्व है?

- **प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत: अभिलेख प्राचीन भारतीय इतिहास** के पुनर्निर्माण के लिये प्रामाणिक और प्रत्यक्ष स्रोत हैं, जो बाद के प्रक्षेपों और पूर्वाग्रहों से मुक्त साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।
  - अंकित तिथियाँ और घटनाएँ सटीक ऐतिहासिक समय-सीमा स्थापित करने में सहायता करती हैं।
- **राजनीतिक इतिहास पर अंतर्दृष्टि:** अभिलेख प्राचीन भारत में **शासकों, राजवंशों, विजयों, संधियों** और **प्रशासन** के बारे में बहुमूल्य विवरण प्रदान करते हैं।
- **प्रशासनिक प्रणालियाँ: अभिलेखों में अक्सर राजस्व प्रणालियों, भूमि अनुदान, कराधान** और **न्यायिक ढाँचे** के बारे में जानकारी शामिल होती है।
  - उदाहरण के लिये, **रुद्रदामन** के **जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख में सुदर्शन झील बाँध** के निर्माण और मरम्मत का वर्णन है, जो जल प्रबंधन में प्रशासनिक प्राथमिकताओं का प्रमाण प्रदान करता है।
- **भाषाई विकास**: अभिलेख **भाषाओं, लिपियों** और **साहित्यिक शैलियों** के विकास का दस्तावेज़ीकरण करते हैं।
  - **प्राकृत, ग्रीक** और **अरमाइक भाषाओं** में उत्कीर्ण अशोक के **अभिलेख** भाषाई विविधता और शासन को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिये स्थानीय लिपियों के उपयोग पर प्रकाश डालते हैं।
- **सामाजिक-आर्थिक संरचनाएँ: व्यापार प्रथाओं, सामाजिक मानदंडों, जाति प्रणालियों** और **आर्थिक विवरणों की जानकारी** प्रायः अभिलेखों से प्राप्त होती है।
  - अभिलेखों से **प्राचीन धर्मों, मंदिर निर्माण, अनुष्ठानों** और **शाही संरक्षण** के बारे में विवरण पता चलता है।

प्राचीन भारत के कुछ महत्त्वपूर्ण अभिलेख

- **राजनीतिक अभिलेख:**
  - **जूनागढ़ (गिरनार) अभिलेख (रुद्रदामन):** दूसरी सदी का एक संस्कृत अभिलेख जिसमें **रुद्रदामन की उपलब्धियों** का विवरण है और [चंद्रगुप्त मौर्य] के **राज्यपाल पुष्यगुप्त** द्वारा **सुदर्शन झील बाँध** के निर्माण का उल्लेख है।

- **भितरी स्तंभ अभिलेख: हूणों** के विरुद्ध **स्कंदगुप्त की सैन्य सफलता** और उसके **प्रशासनिक सुधारों** का वर्णन करता है।

- **प्रशासनिक और भूमि अनुदान अभिलेख**
  - **पहाड़पुर अभिलेख (बुद्धगुप्त):** बांग्लादेश में पाए गए इस अभिलेख में गुप्त काल के दौरान भूमि अनुदान और धार्मिक संरक्षण पर प्रकाश डाला गया है।
  - **मंदसौर अभिलेख:** हूणों पर **यशोधर्मन** की विजय का विवरण, तथा क्षेत्र में स्थिरता बहाल करने में उनकी भूमिका पर बल दिया गया है।
  - **ग्वालियर अभिलेख (राजा भोज प्रथम):** इसमें **ब्राह्मणों को दिये गए अनुदानों** का वर्णन है और **अग्रहारों** का उल्लेख है, जो कि **गुर्जर-प्रतिहारों** के अधीन **सामाजिक-आर्थिक प्रथाओं** को दर्शाता है।
  - **बाँसखेड़ा ताम्रपत्र: हर्षवर्धन** द्वारा हस्ताक्षरित, यह उनके **वंश, प्रशासन** और **शासन** के बारे में विवरण प्रदान करता है।
  - **देवपारा प्रशस्ति: बंगाल की विजय सेना** की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है, तथा उस समय के **सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य** में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

शिलालेख और प्रस्तर अभिलेख

सोहगौरा ताम्रलेख (Sohgaura Copper Plate)

- **स्थिति-** सोहगौरा, गोरखपुर (UP)
- **उल्लेख -** अकाल राहत प्रयास
- **भाषा -** प्राकृत*
- **विशेषताएँ - मौर्य वंश**
  - सबसे प्रारंभिक ज्ञात ताँबे की प्लेट
  - (दुर्लभ) पूर्व-अशोक ब्राह्मी शिलालेख

अशोक के अभिलेख

- **स्थिति -** पूर्वी भारत
- **उल्लेख -** धर्म के प्रति अशोक का दृष्टिकोण (बौद्ध दर्शन)
- **भाषा -** मगधी प्राकृत*
- **विशेषताएँ -** 33 शिलालेख (स्तंभ शिलालेख, प्रमुख प्रस्तर अभिलेख, लघु शिलालेख)
  - **बौद्ध धर्म का पहला मूर्त प्रमाण**
  - अशोक **देवनामपियदस्सी** के रूप में "भगवान के प्रिय सेवक"

रुम्मिनदेई स्तंभ अभिलेख

- **स्थिति -** लुंबिनी, नेपाल
- **उल्लेख -** अशोक की लुंबिनी यात्रा और वहाँ दी गई कर छूट
- **लिपि -** ब्राह्मी
- **विशेषताएँ -** लघु स्तंभ शिलालेख

प्रयाग-प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ)

- **स्थिति** - इलाहाबाद किला (पहले कौशांबी)
- **उल्लेख -** अशोक स्तंभ लेकिन 4 अलग-अलग शिलालेखों के साथ
- **लिपि -** ब्राह्मी
- **4 शिलालेखों में शामिल हैं-**
  - सामान्य अशोकन शिलालेख
  - रानी कौर्वकि अभिलेख
  - हरिषेण द्वारा समुद्रगुप्त की विजय का उल्लेख
  - जहाँगीर के शिलालेख फारसी में

महरौली शिलालेख (महरौली लौह स्तंभ)

- **स्थिति -** कुतुबमीनार परिसर, दिल्ली
- **उल्लेख -** वाकाटक और वंग (Vanga) देशों की विजय का श्रेय चंद्रगुप्त द्वितीय को दिया जाता है।
- **लिपि -** ब्राह्मी
- **विशेषताएँ - गुप्त वंश**
  - चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा **विष्णुपद** के रूप में स्थापित स्तंभ (भगवान विष्णु के सम्मान में)
  - जंग प्रतिरोधी धातु संरचना हेतु उल्लेखनीय।

कालसी शिलालेख

- **स्थिति -** कालसी नगर (उत्तराखंड)
- **उल्लेख -** प्रशासन, अहिंसा, आध्यात्मिकता में अशोक का मानवीय दृष्टिकोण
- **भाषा -** प्राकृत*
- **विशेषताएँ -** उत्तर भारत में एकमात्र स्थान, जहाँ अशोक के 14 शिलालेख मौजूद हैं।

मस्की शिलालेख

- **स्थिति -** मस्की (कर्नाटक में एक पुरातात्विक स्थल)
- **उल्लेख -** धर्मशासन (बौद्ध सिद्धांतों को बढ़ावा देता है)
- **भाषा -** प्राकृत*
- **विशेषताएँ -** पहला शिलालेख जिसमें पियदस्सी के स्थान पर अशोक का नाम है।

कलिंग अभिलेख

- **स्थिति -** कलिंग, ओडिशा
- **उल्लेख -** कलिंग युद्ध अशोक के लिये निर्णायक मोड़
- **भाषा -** मगधी प्राकृत, लिपि - ब्राह्मी
- **विशेषताएँ -** 14 शिलालेखों में से 11 का समूह
  - शांति का संकेत देने वाले 2 विशेष प्रस्तर अभिलेख
  - अशोक ने **दिग्विजय (Digvijaya) को** छोड़ दिया, अहिंसा और बौद्ध धर्म अपनाया

ऐहोल अभिलेख

- **स्थिति -** मेगुती मंदिर, कर्नाटक
- **उल्लेख -** पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्द्धन को पराजित किया
- **भाषा -** संस्कृत; लिपि - कन्नड़
- **विशेषताएँ -** चालुक्य विजय→पल्लव
  - **राजधानी: ऐहोल→बादामी**
  - रविकीर्ति (पुलकेशिन द्वितीय के दरबारी कवि) द्वारा लिखित

चालुक्यों की पहली राजधानी ऐहोल थी

हाथीगुंफा अभिलेख (हाथी गुफा शिलालेख)

- **स्थिति -** उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ, ओडिशा
- **उल्लेख -** जैन धर्म के समर्थक राजा खारवेल का इतिहास
- **भाषा -** प्राकृत*
- **विशेषताएँ - महामेघवाहन वंश**

नोट: *यहाँ * का तात्पर्य यह है कि जहाँ भाषा प्राकृत है, वहाँ लिपि ब्राह्मी है।*

Drishti IAS

//

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. निम्नलिखित में से किस शासक ने अपनी प्रजा को इस अभिलेख के माध्यम से परामर्श दिया ?

"कोई भी व्यक्ति जो अपने संप्रदाय को महिमा-मंडित करने की दृष्टि से अपने धार्मिक संप्रदाय की प्रशंसा करता है या अपने संप्रदाय के प्रति अत्यधिक भक्ति के कारण अन्य संप्रदायों की निन्दा करता है, वह अपितु अपने संप्रदाय को गंभीर रूप से हानि पहुँचाता है।" **(2020)**

(a) अशोक
(b) समुद्रगुप्त
(c) हर्षवर्धन
(d) कृष्णदेव राय

उत्तर: (a)

प्रश्न. निम्नलिखित में से किस उभारदार मूर्तशिल्प (रिलीफ स्कल्पचर) शिलालेख में अशोक के प्रस्तर रूपचित्र के साथ 'राण्यो अशोक' (राजा अशोक) उल्लिखित है? (2019)

(a) कंगनहल्ली
(b) साँची
(c) शाहबाजगढ़ी
(d) सोहगौरा

उत्तर: (a)

?????:

प्रश्न. आरंभिक भारतीय शिलालेखों में अंकित तांडव नृत्य की विवेचना कीजिये। **(2013)**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sanskrit-inscription-found-in-pok